राजनीतिक दलों की उत्पत्ति या राजनीतिक दलों के आधार

ब्राइस ने अपनी पुस्तक **आधुनिक प्रजातंत्र** में लिखा है कि **राजनीतिक दल जनतंत्र से कहीं अधिक प्राचीन है।** लेकिन इस प्रकार का मत व्यक्त करते हुए ब्राइस के द्वारा प्राचीन समय में स्थापित क्लब घर ,राजनीतिक समाज और संसदीय गोष्ठियों को राजनीतिक दल मान लिया गया है। यद्यपि इन संसाधनों संस्थाओं द्वारा राज्य विषयक अनेक बातों के संबंध में लोकमत का प्रकाशन किया जाता है किंतु शासन व्यवस्था से मूल रूप में संबंधित ना होने के कारण यह संस्थाएं राजनीतिक दल नहीं थी। आधुनिक समय के राजनीतिक दल वर्तमान युग की ही उपज है और आधुनिक राजनीतिक दलों का विकास जनतंत्र और मताधिकार के साथ साथ ही हुआ है। राजनीतिक दलों के उद्गम के संबंध में प्रमुख रूप से निम्नलिखित विचारों का प्रतिपादन किया जाता है:

1. **मानव स्वभाव का सिद्धांत** -मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के आधार पर राजनीतिक दलों को मानव स्वभाव में निहित मूल प्रवृत्तियों पर आधारित कहा जाता है ।कुछ लोग स्वभाव से ही रूढ़िवादी होते हैं और किसी प्रकार का परिवर्तन पसंद नहीं करते हैं। कुछ लोग धीरे-धीरे परिवर्तन चाहते हैं और कुछ लोग तुरंत आमूलचूल परिवर्तन के पक्ष में होते हैं ।परिस्थितियों में परिवर्तन और आयु में वृद्धि के साथ भी मानव स्वभाव में इस प्रकार का परिवर्तन उत्पन्न हो जाता है। इस स्वभाव भेद के आधार पर मनुष्य में भी चार भेद पाया जाता है और इस प्रकार के विचार भेद राजनीतिक दलों को जन्म देते हैं।
2. **आर्थिक हित और विचार** : राजनीतिक दल आर्थिक विचार भेद के भी परिणाम होते हैं और वर्तमान समय के तो सभी राजनीतिक दल आर्थिक विचारों पर आधारित है। आर्थर होलकौंम्ब ने ठीक ही कहा की **राष्ट्रीय दल क्षणिक आवेगो या अस्थाई आवश्यकताओं के आधार पर नहीं चल सकते**

Scanned with CamScanner

उन्हें स्थाई सामुदायिक हितों विशेषता आर्थिक हितों पर आधारित होना चाहिए । सर्वसाधारण में संपत्ति विषयक भेदभाव उनके आर्थिक दृष्टिकोण और उनकी आर्थिक समस्याएं मुख्य रूप से राजनीतिक दलों के निर्माण में सहायक होती है और उन्हें स्थायित्व भी प्रदान करती ।

3. **वातावरण संबंधी प्रभाव** : समानता यह कहा जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति धार्मिक संस्कारों के समान ही राजनीति संस्कार भी साथ लेकर ही उत्पन्न होता है। अपने इन राजनीतिक संस्कारों के आधार पर वह किसी विशेष राजनीतिक दल से संबंध संवाद होता है। अनेक बार एक व्यक्ति के पारिवारिक सदस्य और उनके मित्र भी उनके लिए राजनीतिक दल का मार्ग खोजते हैं लेकिन राजनीतिक चेतना के विकास के साथ-साथ वातावरण संबंधी प्रभाव कम होता जा रहा है।
4. **धार्मिक और सांप्रदायिक भावनाएं:** पाश्चात्य देशों के नागरिकों में धार्मिक और सांप्रदायिक भावनाएं बहुत अधिक बलवती ना होने के कारण धार्मिक और सांप्रदायिक भावनाओं पर आधारित राजनीतिक दल नहीं बन पाते हैं किंतु भारत और पूर्व के कुछ देशों में इस प्रकार के सांप्रदायिक दल विद्यमान हैं। वस्तुतः यह दल संपूर्ण राज्य के हितों से संबंधित नहीं होते हैं ।इस कारण इन्हें विशुद्ध राजनीतिक दल नहीं कहा जाता है या जा सकता है । सर हेनरी मेन जैसे कुछ लेखकों का विचार है कि राजनीतिक दल मानव की संघर्षी प्रवृत्ति पर आधारित होते हैं किंतु इस कथन को स्वीकार नहीं किया जा सकता। वस्तुतः राजनीतिक दल संघर्ष नहीं वरन सहयोग की प्रवृत्ति पर आधारित होते हैं। मानव स्वभाव तथा मूलभूत राजनीतिक और आर्थिक विचारों पर आधारित राजनीतिक दलों को ही स्वस्थ राजनीतिक दल कहा जा सकता है प्रजातंत्र के लिए इस प्रकार के राजनीतिक दल ही उपयोगी हो सकते हैं।

Scanned with CamScanner